SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

वर्तमान समय में गाँधी जी के सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता

प्रतिभा अवस्थी, समाजशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
प्रतिभा अवस्थी, समाजशास्त्र विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

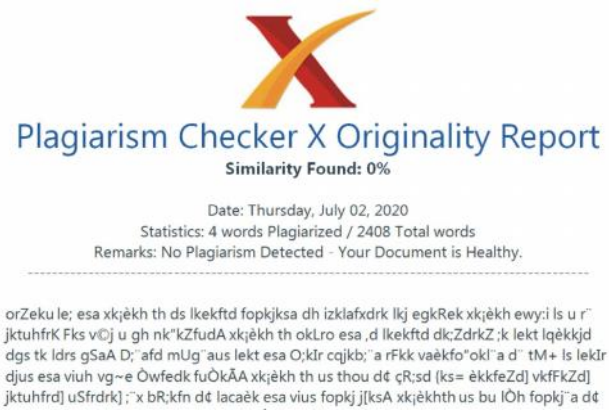

Received on : 02/07/2020
Revised on : -----
Accepted on : 10/07/2020
Plagiarism : 00% on 02/07/2020

शोध सारांश :

महात्मा गाँधी मूलरूप से न तो राजनीतिज्ञ थे और न ही दार्शनिक। गाँधी जी वास्तव में एक सामाजिक कार्यकर्ता या समाज सुधारक कहे जा सकते हैं। क्योंकि उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों तथा अंधविश्वासों को जड़ से समाप्त करने में अपनी अहम भूमिका निभाई। गाँधी जी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिकता, योग इत्यादि के संबंध में अपने विचार रखे। गाँधीजी ने इन सभी विचारों के अतिरिक्त सत्य, अहिंसा तथा सर्वोदय के विचार भी समाज के समक्ष रखने। न केवल उन्होंने सामज के सम्मुख प्रस्तुत किये, बल्कि स्वयं के ऊपर अपने दिए गए सिद्धान्तों को अपने स्वयं पर लागू करने के बाद समाज को दिये थे। जिसे देश की जनता ने समर्थन दिया।

मुख्य शब्द :

गाँधी जी, सामाजिक विचार।

प्रस्तावना :

मनुष्य जन्म से महान पैदा नहीं होता है उसके विचार ही उसे महान बनाते हैं। विचारों की शुद्धता तथा सरलता ही महान लोगों को आम लोगों से अलग करती है। महात्मा गाँधी आज हिन्दुस्तान के ही नहीं, बल्कि समूची दुनिया के एक विख्यात महापुरुष हैं। वास्तव में महात्मा जी ने जो कुछ हासिल किया है, और जिसके कारण हम उन्हें पूजते हैं, वह सब कुछ उन्होंने अपनी साधना और तपस्या के बल पर पाया है। कुछ–कुछ अंशों में उनका बड़पन्न उनके बचपन में भी नजर आता है। हम उनके जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजी की छोटी–सी बातों में भी सत्य का कितना बड़ा रूप छिपा है।

शोध उद्देश्य :

1. गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।

2. गाँधी जी के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।

गुजरात के पोरबन्दर में वैष्णव धर्मावलम्बी, सम्पन्न एवं सम्मानित परिवार में मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म हुआ था। इनका वास्तविक नाम मोहनदास करमचन्द् गाँधी था। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी तथा माता का नाम पुतली बाई था। 02 अक्टूबर 1969 (भाद्रपद 12, संवत 1925) को भारतीय सामाजिक इतिहास में यह दिन 'गाँधी का जन्म' ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है। साबरमती के इस सन्त का विश्व परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण नाम है।

गाँधी जी पर बचपन से भारतीय सामाजिक संस्कार का प्रभाव माता की अत्यन्त धार्मिक प्रकृति के कारण था। गाँधी जी ने सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार माना और मनुष्य की किसी भी तरह की भौतिक या आध्यात्मिक विकास के लिये इसे इतना ही आवश्यक माना जितना कि बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए माता का दूध। यही कारण है कि समाज के विकास में व्यक्ति का योगदान व्यवस्था के अनुसार अनिवार्य रूप से रहा है।

सर्वमान्य सत्य है कि पुरातन काल से ही समाज के विकास में शिक्षा का आरम्भ हो चुका था। सामाजिक विकास के उत्थान में शिक्षा सहज और स्वभाविक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को मस्तिष्क में प्राकृतिक रूप से समाहित होकर अपने विचारों एवं अनुभवों से आगे गतिशील रहती है।

महात्मा गाँधी सामाजिक गतिविधियों में रुचि लेते थे। खेलकूद, तमाशे और नाटकों को देखने में भी रुचि लेते थे। सत्यवादी हरिशचन्द्र नाटक इनके ऊपर बड़ा प्रभावशाली सिद्ध हुआ जो आगे चलकर उनके सामाजिक जीवन का दर्शन बना। यही कारण है कि गाँधी सत्य, अहिंसा, शांति के पुजारी ही नहीं बने, बल्कि ये उनके जीवन के अस्त्रभी रहे। स्वभाव के शर्मीले तथा गम्भीर गाँधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि **'मैं बहुत ही शर्मीला लड़का था पाठशाला में अपने काम से काम रखता था, घंटी बजने के समय पहुँचता था और पाठशाला के बन्द होते ही घर भागता था।'**

महात्मा गांधी के आदर्शों, विश्वासों एवं दर्शन से उदभूत विचारों के संग्रह को गांधीवाद कहा जाता है। उनके विचारों जिनमें स्वराज, पंचायत तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था, धर्म, स्वच्छता, सत्य, अहिंसा, सर्वोदय, अस्पृश्यता, सत्याग्रह तथा शिक्षा के विचारों का सम्मिलित रूप से संग्रह ही गांधीवाद के नाम से जाना जाता है।

गांधीवाद और समाजवाद का उद्देश्य यद्यपि बहुत–कुछ एक जैसा मालूम होता है फिर भी उनकी पहुँच के मार्ग में काफी अंतर है। समाजवाद व्यक्ति के सुधार को कोई पृथक महत्व नहीं देता। वह समाज की सारी व्यवस्था करके उसे प्रत्येक के माथे मढ़ता है। यह सभी को मान्य है कि समष्टि व्यक्ति का ही समुदाय है, समाज व्यक्तियों से ही बनता है, किन्तु प्रश्न यह होता है कि समाज को उन्नत बनाने के लिए पहले व्यक्ति को उन्नत बनाना होगा या किसी सामाजिक व्यवस्था के द्वारा हम समाज को उन्नत बना सकते हैं, जिससे व्यक्ति की भी उन्नति हो पोगी? गांधीवाद का कहना यह है कि व्यक्तियों को सुधार और उनकी उन्नत अवस्था के द्वारा ही समाज की उन्नत अवस्था स्थापित हो सकती है। समाजवाद को भी हिंसा अख्तियार करने का कोई आग्रह नहीं है। वे वर्ग–संघर्ष का अंत कर समाज की शांति–व्यवस्था और अंहिसा की स्थापना करना चाहते हैं।

आधुनिक युग में गाँधी जी ने भारतीय संस्कृति पर आधारित मान्यताओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। जिस सत्य तथा अहिंसा का प्रयोग वे जीवन भर करते रहे उनका अन्तिम प्रयोग उन्होंने 30 जनवरी, 1948 को अपने प्राणों की आहुति देकर किया। कंवरलाल ने अपनी पुस्तक 'गुड बाई मिस्टर गाँधी' में इसे अन्तिम प्रयोग की संज्ञा दी है।

उनके विचारों का अध्ययन करना देश की वर्तमान पीढ़ी के लिए, भावी पीढ़ियों के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि जो विचार और चिंतन एवं कर्मयोग गाँधी जी ने दिया वह शाश्वत है और उसको निरन्तर दोहराते रहना मानव–समाज के लिए सदैव श्रेयस्कर रहेगा।

आज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ ही ऐसी है, जिनके कारण मनुष्य विनाश के कगार की ओर अग्रसर हो रहा है। समाज में स्नेहपूर्ण बन्धन समाप्त हो रहे हैं, राजनीतिक जीवन में त्याग और तपस्या तथा बलिदान के स्थान पर भ्रष्टाचार व्याप्त है। आज देश के सामने दो ही रास्ते मुख्य रूप से हैं – एक मार्क्सवादी विचारधारा और दूसरा गाँधी जी की विचारधारा का। गहन चिन्तन और अध्ययन के आधार पर इस बात का निर्णय लेने की आवश्कता है कि किस मार्ग का अनुशरण किया जाए और कौन–सा मार्ग अधिक श्रेयस्कर है।

गाँधी जी के शिक्षा–चिन्तन की उपयोगिता पर विचार करना और भी आवश्यक हो गया है। आज शिक्षा के क्षेत्र में घोर दुर्व्यवस्था फैली है, शिक्षा संस्थाओं में अशांति का वातावरण है, शिक्षा व्यवस्था आज भी गुलामों के समय में निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करती है। शिक्षण का स्तर गिर गया है, अध्ययन की प्रवृत्ति समाप्त हो रही है। बच्चों का सर्वांगीण विकास की बात तो आज की शिक्षा में सोचनी ही नहीं चाहिये।

जैसेन्ट विश्व हिंसा, आर्थिक मंदी, बेरोजागरी, महंगाई तथा तनावपर्ण वातावरण उपजता जा रहा है। वैसे–वैसे दुनिया को गाँधी दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता महसूस हो रही है। यदि समाज चाहता है कि उपरोक्त समस्याओं का निदान मिल जाये तो इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि वह गाँधी दर्शन को आत्मसात करना ही होगा। अर्थात् गाँधी जी के सत्य, अहिंसा पर आधरित दर्शन, विचारों को आत्मसात् करना ही होगा।

महात्मा गाँधी के भाव और विचार सर्वथा नवीन और क्रांतिकारी हुआ करते थे। किन्तु उन्होंने कभी इस बात का दावा नहीं किया कि उनके उनके विचार और भाव मौलिक हैं। वह बार–बार यह कहा करते थे कि मैं जो कुछ लोगों को सीख दे रहा हूँ उसमें सब धर्मों के प्राचीन महापुरुषों के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करने और प्राचीन नियमों और आदर्शों का पालन करने की चेष्टा के सिवा और कुछ नहीं है। उनका यह भी कहना था कि वह संसार को कोई नई बात नहीं दे रहे हैं। और ऐसा वह केवल आत्म संकोचवश कहा करते थे, सो बात नहीं है।

किसी प्रकार की मौलिकता का दावा न करके गांधी जी अनी जाति की स्वाभाविक प्रतिभा के साथ सामंजस्य रखते हुए कार्य कर रहे थे, क्योंकि भारत वर्ष में जितने महापुरुष हुए हैं उनमें कभी किसी ने यह दावा नहीं किया कि उन्होंने किसी नये सत्य का संधान किया है। उनके जितने विचार थे उन सबका सन्धान हम प्राचीन काल से चले आते हुए मान्य विचारों में पाते हैं। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि जिन लोगों ने नये विचारों का प्रचार किया था, उनके नाम तक अज्ञत्रात हैं। जितने मत–मतान्तर हैं, वे अति पुरातनकाल से चले आते हुए माने जाते हैं। भारतीय प्रतिभा की यही विशेषता रही है कि वह निर्वयक्तिक रूप में, यहाँ तक कि, बिना नाम के ही काम करती रही है। प्रतिभा का दान चाहे कितना भी मौलिक क्यों न हो, वह व्यक्तिगत न होकर बराबर व्यक्तिगत ही समझा जाता था। ललित कला के क्षेत्र में भी कलाकार के संबंध में यह विश्वास किया जाता था कि वह चिरागत एवं मान्य शिल्प–विज्ञान एवं परम्परा की सीमाओं के अंदर रहकर ही नूतन रूप में सौंदर्य सृष्टि करता था, किन्तु प्राचीन के साथ यह सादृश्य जितना बाह्य रूप में दृष्टिगत होता था, उनता वह वस्तुतः होता नहीं था। आज भी हम किसी विचार की प्रगति का मूल सूत्र युग–युग से चली आती हुई परम्परा के बीच ढूँढ़ सकते हैं। नये विचार, मतवाद और आदर्श व्याख्या और भाग्य के रूप में अज्ञात भाव से चले आये। बड़े से बड़े मौलिक और क्रांतिकारी विचारक भी अपने को केवल भाष्यकार ही समझा करते थे जिनका काम केवल इतना ही होता था कि प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए उसकी अक्षुण्णता को कायम रखें। प्रत्येक विधान सनातन और चिरन्तन समझा जाता है।

गाँधीजी एक नया समाज रचना रहते थे। इसके लिए उन्होंने दुहरी क्रान्ति का प्रस्ताव रखा। ये दोनों क्रान्तियों एक के बाद एक नहीं बल्कि–साथ ही होनी थी, और चाहिए। अन्य क्रान्तिकारी प्रणालियों के नाकाम होने का कारण था कि उन्होंने अकेले व्यक्ति को बदनले पर जोर दिया या समाज को। गाँधीजी ऐसा व्यक्ति और समाज चाहते थे, जो मौजूदा शोषण–आधारित व्यवस्था को बदल कर उसे असमानता तथा एक वर्ग पर दूसरे के हावी होने की प्रकृति से मुक्त कराए। मानव ही सभी चीजों का पैमाना है और जब तक वह खुद ही नए सामाजिक मूल्यों को स्वीकार करने को तैयार नहीं होता, तब तक नए समाज का ढाँचा खड़ा नहीं किया जा सकता। यह मानस–परिवर्तन से ही सम्भव है। मानव में हृदय–परिवर्तन लाने के लिए गुणात्मक स्तर पर एक ऐसा मानवीय तरीका अपनान होगा, जिसमें जीवन्त आचरण का आदर्श सामने रख, मन से मन पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसी को गाँधीजी

ने अहिंसा का तरीका कहा था। वह प्रेम की ही ताकत है, जो समस्त मानवता और सृष्टि को जीवन्त बना टिकाए रखती है। गाँधीजी ने अपने सत्य और प्रेम के लम्बे तथा सतत् प्रयोगों के माध्यम से इस सनातन शक्ति की खोज की और उसी का उपयोग मानव और समाज को बदलने के लिए किया। वे मानव को उठाकर अस्तित्व के ऐसे ऊँचे धरातल पर प्रतिष्ठित करना चाहते थे, जहाँ वे स्वार्थों के ऊपर उठ मानव–परिवार का एक बराबरी का सदस्य बन सके।

इन्हीं विचारों के कारण गाँधीजी को अव्यावहारिक ओर दकियानूसी भी घोषित कर दिया गया। अनेक आधुनिक पण्डितों और विचारकों ने उनकी आदर्शवादी मुद्रा को तिरस्कार की नजर से देखा। इसलिए उनके अंतिम दिनों में उनके इस विचारों की उपेक्षा भी की गई।

सारांश

गाँधी जी पर वेदों उपनिषदों का प्रभाव जबरदस्त रूप से पड़ा, इसलिए उनका दर्शन वेदान्त दर्शन माना जा सकता है। महात्मा गाँधी जी का दर्शन एक प्रकार के दर्शन कहा जा सकता है। वेद और उपनिषद का उनके जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा। इसलिए उनका दर्शन 'नव्य वेदान्त दर्शन' कहा जा सकता है। वेदान्त दर्शन की तरह वे एक ही परमतत्व पर जोर देते थे।

गाँधी जी के अनुसार मानव यदि पूर्णता प्राप्त करना चाहता है तो उसका कर्तव्य है कि वह निरन्तर अधिक से अधिक प्रगति करता रहे। अन्यथा वह कभी भी पूर्णता की प्राप्ति नहीं कर सकता। गाँधी जी का कहना है कि निर्भीकता का गुण आने पर व्यक्ति सत्याग्रह का मार्ग अपनाये। अर्थात् वह सत्य पर अटल रहना सीखेगा। सत्य पर अटल रहने के एवं साध्य को प्राप्त करने के अनेक मार्ग हैं। मारकाट भी एक मार्ग है। अहिसा स्वयं एक मार्ग है बिना खून–खराबा किए अपनी बात पर अटल रहकर एवं जनमत को प्रभावित करके व्यक्ति साध्य प्राप्त कर सकता है।

गाँधी जी के लिए सत्याग्रह एक प्रतिधि थी। जिसके द्वारा वे सामाजिक एवं राजनीतिक बुराइयों को दूर करने के लिए आन्दोलन करते थे। गाँधी जी एक लेख में लिखते हैं – 'मैं अत्याचारी तलवार की धार को पूरी तरह कुंठित करना चाहता हूँ, इसके विरोध में एक अधिक तेज शस्त्र को रखकर नहीं, किन्तु इस आशा को कि मैं उसका शारीरिक प्रतिरोध करूँगा, निराशा में बदलकर।'

आज की मूलभूत आवश्यकता है धर्म व धार्मिक शिक्षा, व्यक्तित्व की समग्रता व सामाजिक समानता एवं विद्यमान विश्वासों का पालन होना चाहिए। इसके आधार पर यह शिक्षा देना ही नहीं है, बल्कि मस्तिष्क की सुदष्ढ़ता, तर्कशीलता तथा ऐसी प्रजातंत्र की भावना का उदय करना जो व्यक्ति को जिम्मेदार नागरिक भी बनाए। एक–दूसरे की भावना का सम्मान करें। इस प्रकार गाँधी के व्यक्तित्व, कृतित्व दर्शन एवं शैक्षिक विचारों को अध्ययन से राष्ट्रवासियों तथा विद्यार्थियों को इस दिशा में कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

गांधी जी का सारा जीवन शोषण के विरुद्ध आजीवन लड़ते हुए व्यतीत हुआ। अंग्रेजी शासनकाल में भारत में अनेक बुराईयां व्याप्त हो गई थीं। जिसे गाँधी जी ने अपनी सरलता व अद्‌भुत शक्ति के बल पर समाज से उखाड़ फेंका। उन्होंने यह सब हिंसा के बल पर न करते हुए सत्य, अहिंसा तथा सर्वोदय के माध्यम से कर दिखाया।

समाज सुधारक के रूप में गाँधीजी ने समाज में व्याप्त बुराईयों का विरोध किया। तत्कालीन समाज में जाति प्रथा की कठोरता व्याप्त थी, सती प्रथा थी, विधवा विवाह निषेध था, बाल विवाह की प्रथायें प्रचलित थीं तथा स्त्रियों को समान अधिकार प्राप्त नहीं था। गाँधी जी के नेतृत्व में इन बुर्रायों के विरुद्ध अनेक आंदोलन चलाए गए तथा महिलाओं को समाज में सम्मान प्रदान करने तथा समान अधिकार दिलाने पर बल दिया। इसके लिए महात्मा गांधी जी ने स्त्री सिक्षा पर बल दिया. गाँधी जी का मानना था कि शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके बल पर महिलाएं आत्म निर्भर हो सकती हैं। उन्होंने स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए न केवल समाज को जागरूक बनाया, बल्कि उनकी शिक्षा के लिए तत्कालीन सरकार से लड़कर उनके अधिकार समाज में स्थापित कराये।

निष्कर्ष :

महात्मा गाँधी ने राजनीति, समाज, अर्थ एवं धर्म के क्षेत्र में आदर्श स्थापित किये व उसकी के अनुरूप लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वयं को समर्पित ही नहीं किया, बल्कि देश की जनता को भी जनता को भी प्रेरित किया व आशानुरूप परिणाम भी प्राप्त किये। उनकी जीवन दृष्टि भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। आज गांधी हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में लगभग उन सभी मुद्दों पर उनका मार्गदर्शन निरन्तर हमारे साथ है। जिसका सामना किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र को करना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में गांधी की सार्थकता प्रत्येक क्षेत्र में है। इस अहिंसावादी पुरुष के सिद्धान्तों के महत्व को समझकर ही संयुक्त **विश्व अहिंसा दिवस**' के रूप में मनाने की घोषणा की है।

संदर्भ सूची :

1. *राजेन्द्र प्रसाद, (1961), गांधीजी की देन, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, साहित्य प्रकाशन।*
2. *पारुथी, आर.के., (2006), आधुनिक भारत 1905–1919, समाजवाद, राष्ट्रवाद और महात्मा गांधी, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण।*
3. *पंत, देवीदत्त, (1977), गांधी संदर्भ–2, गांधीजी और आधुनिकता (जे.बी. कृपलानी), श्रीराम मेहरा एंड कंपनी, आगरा–3, प्रथम संस्करण 1977।*
4. *गंगराडे*, के.डी., (2006), गांधीजी के आदर्श और ग्रामीण विकास, राधा पब्लिकेशन, नईदिल्ली, प्रथम संस्करण ।

****